अध्याय 9. प्रगीत और समाज

- : लेखक परिचय :-

→ लेखक- नामवर सिंह
⇒ जन्म- 28 जुलाई 1927
⇒ जन्म-स्थान- जीअनपुर, वाराणसी, उत्तरप्रदेश
⇒ निधन- 19 फरवरी 2019
⇒ निधन स्थान- दिल्ली
⇒ माता - वागेश्वरी देवी
⇒ पिता- नागर सिंह (एक शिक्षक)
→ शिक्षा -
(i) प्राथमिक आवाजापुर एवं कमालपुर, उत्तरप्रदेश के गाँवो में कियें।
(ii) हाई स्कूल- हीवेट क्षत्रिय स्कूल बनारस से किये।
(iii) इंटर उदय प्रताप कॉलेज बनारस से किये।
(iv) B.A. (1949) एवं M.A. (1951) B.H.U. से किये।
(v) P.HD (1956)- पृथ्वीराज रासो की भाषा विषय पर B.H.U. से किये।
> वृति (पेशा) -
(i) 1953 ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अस्थायी व्याख्याता बने ।
(ii) 1959-1960 में सागर विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर बने रहे।
(iii) 1960-1965 तक बनारस में रहकर स्वतंत्र लेखन कार्य कियें।
(iv) वें 'जनयुग (साप्ताहिक)' दिल्ली के संपादक और राजकमल प्रकाशन में साहित्य सलाहकार भी बने।
(v) 1967 में 'आलोचना' त्रैमासिक पत्रिका का संपादन आरम्भ कियें।
(vi) 1970 में जोधपुर विश्वविद्यालय (राजस्थान) में हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर बने।
(vii) 1974 में कुछ समय के लिए" कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी विद्यापीठ" आगरा के निदेशक बने।
(viii) 1974 में ही "जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय "दिल्ली के भारतीय भाषा केंद्र में हिंदी प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुयें।
(ix) 1987 में जे०एन०यू० से सेवा मुक्त हुए। पुनः 5 वर्षों के लिए वहीं नियुक्त हुए।
(x) 1993-1996 तक राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन के अध्यक्ष बने रहे।
(xi) वें 'आलोचना' त्रैमासिक के प्रधान संपादक भी रहे हैं।
पुरस्कार (सम्मान) - 1971 ई. में " कविता के नए प्रतिमान " पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
> कृतियाँ (रचना) -
(i) बकलम खुद (व्यक्ति व्यंजक ललित निबन्ध)
(ii) हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग
(iii) आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ
(iv) छायावाद
(v) पृथ्वीराज रासो की भाषा
(vi) इतिहास और आलोचना
(vii) कहानी: नई कहानी
(viii) कविता के नए प्रतिमान
(ix) दूसरी परम्परा की खोज
(x) वाद-विवाद संवाद (आलोचना)
(xi) कहना न होगा (साक्षात्कारों का संग्रह)
(xii) आलोचक के मुख से (व्याख्यानों का संग्रह)

महत्वपूर्ण जानकारी
[1] डॉ. नामवर सिंह हिंदी आलोचना के प्रसिद्ध विद्वान हैं।
[2] उनका विकास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।
[3] उनकी आलोचना में ऐतिहासिक की समझ, परंपरा की रचनात्मक पहचान और सूक्ष्म समयबोध का बहुत अच्छा वर्णन है।
[4] एक आलोचक में विशेष ज्ञान, संवेदनशीलता और काल्पनाशील बौद्धिक निपुणता होना चाहिए। ये सभी गुण नामवर सिंह में मौजूद थे।
[5] नामवर सिंह एक महान आलोचक थे।
[6] एक आलोचक में संग्रह और त्याग का विवेक होना चाहिए।
[7] नामवर सिंह विस्तृत एवं गहन अध्ययन किये हैं।
[8] उन्होंने सिर्फ साहित्य ही नहीं, बल्कि इतिहास, दर्शन, राजनीति और समाजशास्त्र जैसे विषयों का भी गहराई से अध्ययन किये हैं।
[9] साहित्य, भाषाशास्त्र, काव्यशास्त्र और पाश्चात्य आलोचना आदि विषय उनकी रुचि और लेखन कार्य का विशेष अंग है।
[10] नामवर सिंह पेशे से हिंदी के प्रोफेसर हैं। और उन्हें भारत के शीर्ष हिंदी शिक्षकों में प्रतिष्ठा मिली हैं।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

[11] नामवर सिंह प्रसिद्ध लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शिष्य रहे हैं।
[12] हजारी प्रसाद द्विवेदी जी, रवींद्रनाथ ठाकुर के संपर्क में, शांति निकेतन में हिंदी पढ़ाते थे।
[13] नामवर सिंह को रवींद्रनाथ और द्विवेदी जी की आलोचना परंपरा विरासत में मिली है, जिसे उन्होंने 'दूसरी परंपरा' कहा है।
[14] नामवर सिंह अपने गुरु द्विवेदी की तरह एक ओजस्वी और प्रभावशाली वक्ता के रुप में अंतरराष्ट्रीय यश प्राप्त किये है।
[15] नामवर सिंह ने हिंदी आलोचना को सुंदर और रचनात्मक भाषा दी है।
[16] उन्हें हिन्दी आलोचना में नया मुहावरा (अंदाज) लाने का श्रेय प्राप्त हैं।
[17] उन्हें हिंदी आलोचना की महान परंपरा का अहम हिस्सा माना जाता है।
[18] नामवर सिंह मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
[19] उन्हें एक आधुनिक और प्रगतिशील आलोचक के रूप में जाना जाता है।
[20] प्रस्तुत निबंध आलोचनात्मक निबंधों की पुस्तक 'वाद विवाद संवाद' से लिया गया है।
[21] इसमें हजार वर्षों की हिंदी काव्य परंपरा पर विचार किया गया है।
[22] 'प्रगीत' को हिंदी समाज की भावनात्मक प्रकृति और संवेदनाओं की उपज बताया गया है।
[23] आलोचना केवल अच्छाई-बुराई नहीं बताती है, बल्कि यह इतिहास और परंपरा को पहचानना सिखाती है। तथा वर्तमान को गहराई से समझने में मदद करती है।
[24] यह निबंध हमें सोचने और समझने की एक नई दृष्टि देता है।

पाठ का सारांश

प्रगति और समाज नामवर सिंह के द्वारा रचित एक आलोचनात्मक निबंध है जो वाद विवाद और संवाद पुस्तक से लिया गया है। प्रगति और समाज एक ऐसा निबंध है जो भावनाओं से भरी होती है और कम शब्दों में गहराई से भावो को व्यक्त करती हैं। यह जीवन के यथार्थ को अच्छे ढंग से दर्शाती है । यह निबंध केवल अच्छाई- बुराई ही नहीं बताती बल्कि इतिहास और परंपरा को पहचानना भी सिखाती है। तथा यह वर्तमान को गहराई से समझने में भी मदद करती है ।यह हमें सोने और समझने की एक नई दृष्टि भी देती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नामवर सिंह किन कविताओं को श्रेष्ठ मानते हैं? [2018]

उत्तर- नामवर सिंह उन कविताओं को श्रेष्ठ मानते हैं जो समाज की चिंता करती हैं और जनमानस को बदलने की शक्ति रखती हैं। वे प्रगतिशील और आत्मपरक कविताओं को भी महत्व देते हैं।

2. प्रगीतात्मकता का अर्थ आलोचकों की दृष्टि में क्या है? [2016]

उत्तर- आलोचकों के अनुसार प्रगीतात्मकता का मतलब ऐसी कविता से है जिसमें व्यक्ति के सुख-दुख को गहरे भाव से, कम शब्दों में और संगीत की तरह व्यक्त किया गया हो।

3. प्रगीत क्या है? [2017]

उत्तर - प्रगीत वह कविता है जो भावनाओं से भरी होती है और कम शब्दों में गहराई से भाव व्यक्त करती है। यह आत्मपरक होती है और जीवन के यथार्थ को दर्शाती है।

4. हिन्दी की आधुनिक कविता की क्या विशेषताएँ आलोचक ने बतायी हैं?

उत्तर- आधुनिक कविता में कवि का आत्म संघर्ष और सामाजिक सच्चाई दोनों दिखते हैं। यह कविता समाज की हकीकत को साफ-साफ दिखाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य-आदर्श क्या थे, 'प्रगीत और समाज' शीर्षक पाठ के आधार पर स्पष्ट करें। [2025]

उत्तर - रामचंद्र शुक्ल के काव्य-आदर्श प्रबंधकाव्य थे। क्योंकि प्रबंधकाव्य में केवल भाव या सौंदर्य नहीं होता है, बल्कि समाज और जीवन का संपूर्ण चित्र होता है। अच्छी कविता वही होती है जो मानव जीवन के सुख-दुख, संघर्ष और सच्चाई को अच्छे दिखाता है। वे चाहते थे कि कविता से समाज को कुछ सीखने को मिले।

2."कला कला के लिए" सिद्धान्त क्या है? [2019, 2021, 2023]

उत्तर- 'कला कला के लिए' का मतलब है कि कला स्वतंत्र होती है, उसे किसी समाज के उद्देश्य या लाभ के लिए नहीं बनाया जाता है। जब कोई कलाकार अपने मन की भावना को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करता है, तो वह कला कहलाता है। हर कलाकार की सोच और अनुभव अलग होते हैं। अतः

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

कला को देखते समय यह देखना ज़रूरी है कि कलाकार ने अपनी भावना को कितनी अच्छी तरह दिखाया है।

3. नामवर सिंह रचित 'प्रगीत और समाज' निबंध की विवेचना करें। [2014]

उत्तर- यह निबंध 'वाद विवाद संवाद' पुस्तक से लिया गया है। नामवर सिंह हिंदी आलोचना के एक प्रसिद्ध विद्वान थे। प्रगीत और समाज एक ऐसा निबंध है जो भावनाओं से भरी है और कम शब्दों में गहराई से भावों को व्यक्त करती है। यह जीवन के यथार्थ को दर्शाती है। ये निबंध केवल अच्छाई-बुराई ही नहीं बताती, बल्कि यह इतिहास और परंपरा को पहचानना सिखाती है। तथा वर्तमान को गहराई से समझने में मदद करती है। यह हमें सोचने और समझने की एक नई दृष्टि भी देती है।

4. वस्तुपरक नाट्यधर्मी कविताओं से क्या तात्पर्य है?

आत्मपरक प्रगीत और नाट्यधर्मी कविताओं की यथार्थ-व्यंजना में क्या अंतर है?

उत्तर - वस्तुपरक नाट्यधर्मी कविताएं एक ऐसी कविता हैं जिसमें बाहरी जीवन के चित्र दिखाए जाते हैं। जैसे मुक्तिबोध की लंबी कविताएँ इसी तरह की हैं।

आत्मपरक प्रगीत यह एक छोटी कविता हैं, जो कवि केभीतर की अनुभूति को दिखाती है।

नाट्यधर्मी कविताएं - यह भी एक छोटी कविता है, जो कवि के बाहरी अनुभूति को दिखाती हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. "कविता जो कुछ कह रही है उसे सिर्फ वही समझ सकता है जो इसके एकाकीपन में, मानवता की आवाज सुन सकता है।" [2022]

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति नामवर सिंह द्वारा रचित निबंध 'प्रगीत और समाज' से लिया गया हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि कविता चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक, वह दिल की बातें होती है। इसे समझने के लिए संवेदनशील और मानवीय दृष्टि होना बहुत जरुरी है।

वस्तुनिष्ट प्रश्नः

1. 'प्रगीत और समाज' के लेखक का नाम क्या है? (BSEB, 2016, 23)
(A) मलयज (B) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(C) नामवर सिंह (D) जे. कृष्णमूर्ति

2. 'जनयुग' पत्रिका के सम्पादक कौन थे ? (BSEB, 2024)
(A) गणेश शंकर विद्यार्थी (B) अज्ञेय
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) नामवर सिंह

3. नामवर सिंह का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1931 (B) 1956 (C) 1927 (D) 1953

4. 'कविता के नए प्रतिमान' पर डॉ. नामवर सिंह को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब प्राप्त हुआ था ?
(A) 1971 (B) 1972 (C) 1973 (D) 1960

5. नामवर सिंह के ललित निबन्ध का क्या नाम है ? (BSEB, 2023)
(A) बकलमखुद (B) मश्क
(C) जंगल और भेड़िया (D) परमात्मा का कुत्ता

6. नयी कहानी नामक रचना किसकी है ?
(A) मलयज (B) धूमकेतु (C) नामवर सिंह
(D) धूमिल

7. नामवर सिंह के गुरु कौन थे ?
(A) डॉ. नगेन्द्र (B) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(C) डॉ. रामकुमार वर्मा (D) बचनेश त्रिपाठी

8. 'कविता के प्रतिमान' रचना है-
(A) रामधारीसिंह 'दिनकर' की (B) जयशंकर प्रसाद की
(C) रघुवीर सहाय की (D) नामवर सिंह की

9. 'प्रगीत और समाज' किस पुस्तक में संकलित है ?
(A) कहना न होना (B) दूसरी परम्परा की खोज
(C) वाद विवाद संवाद. (D) आलोचक के मुख से

10. नामवर सिंह द्वारा लिखित' प्रगीत और समाज' क्या है ?
(A) आलोचना (B) निबन्ध (C) एकांकी
(D) आत्मकथा

11. 'प्रगीत और समाज' साहित्य की किस विधा की रचना है ?
(A) ललित निबन्ध (B) निबन्ध
(C) आलोचनात्मक निबन्ध (D) आत्मकथा

12. नामवर सिंह किस पत्रिका के सम्पादक रहे हैं ?
(A) धर्मयुग (B) सारिका (C) आलोचना
(D) इनमें से कोई नहीं

13. कौन-सी पुस्तक नामवर सिंह की नहीं है ?
(A) बकलम खुद (B) इतिहास और आलोचना
(C) तिरिछ (D) दूसरी परम्परा की खोज

14. नामवर सिंह को किस कृति पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ ?
(A) कविता के नए प्रतिमान पर
(B) कहानी: नई कहानी पर

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

(C) पृथ्वीराजरासो की भाषा पर
(D) इतिहास और आलोचना पर
15. 'बाज की दाढ़ में आदमी का खून लग चुका है।' यह किस कविता की पंक्ति है ?
(A) हिमालय (B) गरम हथेली
(C) आह ! तुम्हारा सौन्दर्य (D) तय तो यही था
16. 'मैं तुम लोगों से दूर हूँ' किसकी कविता है?
(A) मुक्तिबोध (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(C) पंत (D) अजेय
17. कौन-सी पुस्तक नामवर सिंह की है ?
(A) पीली छतरीवाली लड़की
(B) पृथ्वीराज रासो की भाषा
(C) अन्तराल (D) न आनेवाला कल
18. निम्नलिखित में कौन 'प्रलय की छाया' के कवि हैं ?(A) निराला (B) पंत (C) जयशंकर प्रसाद
(D) रामकुमार वर्मा
19. 'तुलसीदास' के रचयिता कौन हैं ?
(A) तुलसीदास (B) मैथिलीशरण गुप्त
(C) सुमित्रानंदन पंत (D) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला'
20. 'आलोचना' त्रैमासिक के प्रधान सम्पादक कौन थे ?(BSEB, 2022)
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(C) नामवर सिंह (D) जयप्रकाश नारायण
21. 'प्रगीत और समाज' शीर्षक पाठ के अनुसार, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्य-सिद्धान्त के आदर्श क्या थे ?(BSEB, 2022)
(A) भक्तिकाव्य (B) सूफीकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) प्रबन्धकाव्य
22. 'चरम वैयक्तिकता ही परम सामाजिकता है'-किस शीर्षक पाठ की पंक्ति है? (BSEB, 2023)
(A) रोज (B) सिपाही की माँ
(C) शिक्षा (D) प्रगीत और समाज
23. नामवर सिंह का आलोचनात्मक निबन्ध कौन है ?(BSEB, 2023)
(A) अर्द्धनारीश्वर (B) बातचीत
(C) ओ सदानीरा (D) प्रगीत और समाज
24. नामवर सिंह का जन्म कहाँ हुआ था? [2021A]
(A) जीअनपुर में (B) आवाजपुर में
(C) कमालपुर में (D) जमालपुर में
25. 'प्रगीत और समाज' निबंध किस निबंध संग्रह से लियागया है? (2021A]
(A) दूसरी परंपरा की खोज से (B) आलोचक के मुख से
(C) कहना न होगा से (D) वाद-विवाद संवाद से
26. नामवर सिंह के पी-एच०डी० का विषय क्या था? [2022A]
(A) श्रीलाल शुक्ल के राजनीतिक चेतना
(B) नाटकों में मिथकीय आयाम
(C) हिंदी कहानी में मुस्लिम जीवन संदर्भ
(D) पृथ्वीराज रासो की भाषा
27. 'वाद विवाद संवाद' क्या है?[2022A]
(A) आलोचनात्मक निबंधों की पुस्तक
(B) कविता संग्रह (C) कहानी संग्रह (D) नाट्य संग्रह
28. आचार्य रामचंद्र शुक्ल को 'सूरसागर' परिसीमित लगा, क्योंकि (2022A)
(A) प्रबंधकाव्य है (B) गीतिकाव्य है
(C) कहानी संग्रह है (D) कविता संग्रह है
29. 'चरम वैयक्तिकता ही परम सामाजिकता है' किस शीर्षक पाठ की पंक्ति है? [2021A,2023A)
(A) जूठन (B) शिक्षा
(C) प्रगीत और समाज (D) सिपाही की माँ
30. 'प्रगीत और समाज' के लेखक का नाम क्या है? (2016A, 2018A,2023A)
(A) मलयज (B) ओम प्रकाश वाल्मीकि
(C) नामवर सिंह (D) जे० कृष्णमूर्ति
31. नामवर सिंह का आलोचनात्मक निबंध कौन है? (2023A)
(A) अर्धनारीश्वर (B) बातचीत
(C) ओ सदानीरा (D) प्रगीत और समाज
32. नामवर सिंह के ललित निबंध का नाम क्या है? [2023A]
(A) बकलम खुद (B) मश्क
(C) जंगल और भेड़िया (D) परमात्मा का कुत्ता?
33. 'वाद-विवाद संवाद' के रचनाकार निम्न में से कौन हैं?[2024A]
(A) नामवर सिंह (B) अज्ञेय
(C) दिनकर (D) जयशंकर प्रसाद
34. किन्होंने प्रायः लम्बी कविताएँ ही लिखी है? [2022A]
(A) गजानन माधव मुक्तिबोध (B) भूषण
(C) नाभादास (D) जायसी
35. बीसवीं सदी में प्रगीतात्मकता का दूसरा उन्मेष कैसे हुआ?[2022]
(A) संघर्ष के साथ (B) रोमांटिक उत्थान के साथ
(C) विद्वेष के साथ (D) भावुकता के साथ
36. 'जनयुग' पत्रिका के संपादक कौन थे? [2024]
(A) गणेश शंकर विद्यार्थी (B) अज्ञेय
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) नामवर सिंह

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.